**श्री गायत्री परिवार (शांतिकुंज हरिद्वार) के तत्वावधान में 108 कुंडीय महायज्ञ में स्पीकर महोदय का सम्बोधन**

---

1. श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट, शांतिकुंज, हरिद्वार के द्वारा बिजौलिया की पावन भूमि पर आयोजित किए जा रहे **108 कुंडीय महायज्ञ कार्यक्रम** में सम्मिलित होकर मुझे बड़ी प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है।

2. श्री गायत्री परिवार की स्थापना के **स्वर्ण जयंती वर्ष** में मैं आपको अनेक शुभकामनाएं देता हूँ। समाज सेवा और जनकल्याण के अनेक कार्यक्रम गायत्री परिवार द्वारा पिछले कई दशकों से किए जा रहे हैं। मानव के नैतिक और आध्यात्मिक उत्थान की दिशा में काम करते हुए शांति कुंज गायत्री परिवार ने हमारे युग के पुनर्निर्माण के लिए मार्ग दिखाया है।

3. परम सेवाभावी, संत, सुधारक, लेखक, दार्शनिक, आध्यात्मिक मार्गदर्शक और दूरदर्शी **पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी** और उनकी सहधर्मिणी **माता भगवती देवी शर्मा जी** द्वारा स्थापित शांतिकुंज मिशन आज अपने सेवा कार्यों, परोपकार और जन सरोकार के लिए दुनिया भर में जाना जाता है। श्रीराम शर्मा आचार्य जी ने सक्रियता से भारत की स्वतंत्रता के संघर्ष में भाग लिया था। स्वतंत्रता संग्राम में वे कई बार जेल गए थे।आगे चलकर आचार्य जी आध्यात्मिक माध्यमों से सामाजिक और नैतिक उत्थान के कार्य में लग गए। उनके प्रयासों का फल है कि अमेरिका, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया, यूरोप सहित दुनिया के कई देशों में आज संस्थान के केंद्र हैं। पूरे भारत में गायत्री परिवार के 30 से अधिक केंद्र स्थापित हैं।

**4. राजस्थान की बिजौलिया भूमि भी गायत्री परिवार के सेवा कार्यों से घनिष्ठ रूप से जुड़ी हुई है, यह बड़ा सुखद है। बिजौलिया का अपना शानदार इतिहास रहा है।**

**5. इस धरती पर स्वतंत्रता सेनानी विजय सिंह पथिक जी और साधु सीताराम दास जी के नेतृत्व में करीब 50 वर्षों तक बिजौलिया किसान आंदोलन चला था, जिसमें हजारों किसान सामूहिकता के साथ अपनी मांगों के लिए डटे रहे थे। बिजौलिया साहस और सामूहिकता की महान भूमि है। मैं क्षेत्र के सभी लोगों को और इस धरती को बारम्बार प्रणाम करता हूँ।**

6. प्रिय साथियों! गायत्री परिवार हमेशा से ही भारतीय संस्कृति का प्रचार-प्रसार करता रहा है। आज यहाँ इस कार्यक्रम केमाध्यम से भी गायत्री परिवार भारतीय संस्कारों को समृद्ध बना रहा है। पिछले तीन-चार दिनों से चल रहे इस महोत्सव में भारत के **16 संस्कारों** में से कुछ प्रमुख जीवन संस्कार जैसे अन्नप्राशन, नामकरण, मुण्डन, विद्या आरम्भ, गुरूदीक्षा, यज्ञोपवित आदि का आयोजन निःशुल्क किया जा रहा है।

7. मुझे जानकारी हुई है कि क्षेत्र के 100 से अधिक बच्चों के ये संस्कार यहाँ पूर्ण किए गए हैं।हमारी परंपरा में जीवन की पूर्णता के लिए सभी संस्कार अनिवार्य माने गए हैं। संस्कारों से युक्त जीवन सुनियोजित जीवन होता है।इस दिशा में आपके कार्यों की मैं प्रशंसा करता हूँ। इसी के साथ आज यहाँ 108 कुंडीय पवित्र महायज्ञ का आयोजन इस महोत्सव को अत्यंत पावन और प्रतिष्ठित बना रहा है।मैं यज्ञ के लिए बैठे सभी यजमानों को नमस्कार करता हूँ।

8. साथियों, यज्ञ हमारी सनातन संस्कृति का अहम हिस्सा रहे हैं। देवताओं को प्रसन्न करने के लिए वैदिक काल से ही यज्ञ किए जाते रहे हैं। अच्छी बारिश के लिए, अच्छी फसल के लिए, नकारात्मक शक्तियों को दूर कर सकारात्मक ऊर्जा के लिए तथा वातावरण की पवित्रता के लिए यज्ञ आयोजन हमारे सामान्य अनुष्ठानों में शामिल माने गए हैं। हमारे संस्कारों और रिवाजों में अग्नि को देवता माना गया है।

9. यज्ञ के माध्यम से हम अग्नि देव को पवित्र भेंट समर्पित कर स्वच्छ एवं पवित्र परिवेश के प्रति अपनी श्रद्धा और भक्ति दर्शाते हैं। हजारों भक्तों की पूरी श्रद्धा और पूरे विधि-विधान के साथ आयोजित यह महोत्सव हमारी संस्कृति का संवर्धन कर रहा है।

10. मित्रों! भारत अध्यात्म, योग और दर्शन की महान भूमि रही है। अनेक ऋषि, मुनि, साधक और संतों की इस धरती ने दुनिया को भक्ति और समर्पण का संदेश दिया है। ज्ञान और सभ्यता का संदेश भारत ने विश्व को दिया है। संत कबीर, दादू दयाल जी, तुलसीदास जी, रैदास जी, धन्ना जी, मीरा बाई, गवारी बाई, सूरदास जी जैसे अनेक महान लोगों ने भारत भूमि पर जन्म लिया है। इस भूमि को इन संतों ने अपने जन्म और कर्मों से पावन किया है।

11. भगवान बुद्ध ने कहा था कि संसार में दुःखों का मूल कारण लोभ और लालसा है। आज चाहे दुनिया चाहे कितनी ही आगे बढ़ जाए, पर हम जब मनन करते हैं, जब चिंतन करते हैं तो पाते हैं कि भगवान बुद्ध का यह कथन जीवन का सत्य है।

12. **दुनिया आज ग्लोबलाइजेशन की बात करती है, हमारे ऋषि-मुनियों ने वसुधैव कुटुंबकम की अवधारणा हजारों वर्ष पहले ही दे दी थी। हमने विश्व के सभी लोगों को अपना परिवार माना, इसी के साथ हमने सर्वे भवन्तु सुखिनः यानि सबके सुख की कामना की। मैं नहीं समझता कि ऐसी परोपकारी और समावेशी संस्कृति दुनिया में अन्य कोई होगी।**

13. दौड़ भाग करती दुनिया में आज हम देखते हैं कि अनेक लोग तनाव और अवसाद में जीते हैं। भारतीय दर्शन और परंपरा तनाव से मुक्ति का मार्ग भी बताती है। योग, ध्यान और भक्ति हमारी परंपरा के अभिन्न अंग

रहे हैं। स्वस्थ जीवन शैली के लिए भारत ने दुनिया को योग का उपहार दिया है। अभी इसी महीने 10 दिन बाद 21 जून को पूरी दुनिया भारत के मार्गदर्शन में **अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस** मनाएगी।

14. मैं आज आप सभी जनों और गायत्री परिवार के सभी सदस्यों से आग्रह करता हूँ कि अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस में आप भी बढ़-चढ़कर अपनी भागीदारी निभाएं। अपने आसपास के लोगों और अपने संपर्क के सभी लोगों को इसके लिए प्रेरित करें। 21 जून को सामूहिक रूप से योगाभ्यास करें और योग को नियमित जीवन में अपनाने की दिशा में भी काम करें।

15. आज विश्व में **मेडिटेशन** यानि ध्यान को भी बहुत कारगर माना जाता है। निरोगी मन के लिए ध्यान की यह क्रिया भारतीय संस्कृति के मूल में रही है। पूज्य संत श्री रविदास जी ने कहा था कि **'मन चंगा तो कठौती में गंगा।'** हमारी सांकृति में स्वस्थ मन का भी महत्व बताया गया है। आज इंटरनेट के साथ ही हमारी संस्कृति जब **इनरनेट यानि आंतरिक शक्ति** की बात करती है, तो यह भी हामारी संस्कृति की महानता है। हमें गर्व होना चाहिए कि हमारी समृद्ध संस्कृति ने विश्व का मार्ग प्रशस्त किया है।

16. गायत्री परिवार के इस यज्ञ कुंडीय महोत्सव में संस्कारों के साथ ही सामूहिक जप, ध्यान, योग, व्यायाम, आरती, प्रवचन, संगीत एवं भोजन प्रसाद के आयोजन किए गए हैं। इन 4 दिनों में हजारों लोग इस कार्यक्रम में शामिल हुए हैं। जैसे मन की पवित्रता और शुद्धि का अनुभव मुझे यहाँ हो रहा है, मुझे यकीन है कि अन्य लोगों ने भी इसी पवित्र भाव का अनुभव यहाँ किया होगा।

17. प्रिय साथियों, अभी पिछले सप्ताह ही हमने विश्व पर्यावरण दिवस मनाया है। हम जानते हैं कि अनमोल पर्यावरण और हरे-भरे पेड़ आने वाली पीढ़ियों के लिए बहुत ज़रूरी है। लेकिन पर्यावरण संरक्षण के लिए हमारा क्या योगदान हो सकता है! हम किस तरह से प्रकृति को स्वस्थ बनाए रखने में अपनी भूमिका निभा सकते हैं! इस बात को लेकर सामान्यतः मैं देखता हूँ कि लोग ज़्यादा गंभीर नहीं दिखते। साथियों पर्यावरण की रक्षा आज पूरे विश्व के लिए चुनौती है, लेकिन इस दिशा में भी भारत दुनिया का नेतृत्व कर रहा है।

18. पेड़ों को बचाने की हमारे यहाँ प्राचीन परंपरा रही है। हमारी संस्कृति में पीपल, तुलसी जैसे अनेक वृक्ष पूजे जाते हैं। जब हम महान **अमृता देवी बिश्नोई** को याद करते हैं तो हम देखते हैं कि हमारे देश और प्रदेश में पेड़ों के लिए जान तक देने का इतिहास रहा है। **गुरु जाम्भोजी ने कहा था, 'सर साठे रूख रहे तो भी सस्तों जाण।' यानि जीवन देकर भी अगर पेड़ों को बचाया जा सकता है तो वह भी बहुत फायदे की बात है।**

19. हम ऐसी महान और दुनिया को संदेश देने वाली संस्कृति के लोग हैं। आज ज़रूरी है कि हम अपने आचरण में वो बातें अपनाएं कि दुनिया हमसे प्रेरणा पाती रहे, हमसे सीखती रहे।मैं आप सभी से अपील करूंगा कि अपने कुए, बावड़ियों, तालाब, नदियों और पानी के स्रोतों को साफ़ रखने के लिए ज़रूर काम करें।

20. जब भी संभव हो सकें, पेड़ ज़रूर लगाएं, कागज बचाएं, बिजली बचाएं। ऐसे छोटे-छोटे काम कर, अपनी ज़िम्मेदारी पूरी करके भी हम पर्यावरण के संरक्षण में बड़ा योगदान दे सकते हैं।

21. गायत्री परिवार का सेवा का इतिहास रहा है। समाज के वंचित वर्गों के कल्याण और जरूरतमंदों की मदद के लिए आप हमेशा आगे रहे हैं। मैं उम्मीद करता हूँ कि आपके सेवा कार्यों का और अधिक विस्तार होगा। इस वर्ष जब भारत अपनी आज़ादी का अमृत महोत्सव मना रहा है। हम आज़ादी के 75 वें वर्ष में हैं। हमारे देश की उन्नति के लिए यह वर्ष और आने वाले 25 वर्ष बहुत महत्वपूर्ण होंगे। इन 25 वर्षों में हम सबके प्रयासों से भारत विकास के कई पड़ाव पार करेगा। भारत की तरक्की और विकास में गायत्री परिवार की भूमिका अतुलनीय रहेगी। मैं यह उम्मीद आपके प्रसिद्ध संस्थान से करता हूँ।

22. आखिर में, गायत्री परिवार, बिजौलियाँ का हार्दिक अभिवादन करता हूँ। यहाँ उपस्थित सभी लोगों को एक बार पुनः नमस्कार करता हूँ। आप सबको नमस्कार। आपको शुभकामनाएं देता हूँ।

धन्यवाद, जय हिन्द।

———